विशिष्ट बालक(Exceptional children)

विशिष्ट बालकों के प्रकार-

1-बौद्धिक रूप से भिन्न

*मानसिक रूप से पिछड़ा

*शैक्षिक रूप से पिछड़ा

*प्रतिभावान

*सृजनात्मक

2-शारीरिक रूप से भिन्न

*विकलांग या अक्षम

*चिरकाल बीमार एवं क्षतिग्रस्त स्वास्थ्य

*श्रवण क्षतियुक्त

*दृष्टि क्षतियुक्त

*बहुल विकलांग

3-मौखिक संचार से भिन्न

*वाक क्षतियुक्त

*भाषा विकलांग

4-मनो सामाजिक रूप से भिन्न

*संवेगात्मक रूप से अशांत

*सामाजिक रुप से कुसमायोजित

*समस्यात्मक बालक

*अपराधी बालक

5-सांस्कृतिक रूप से भिन्न

*अधिगम असुविधा युक्त

*सांस्कृतिक रूप से अल्पसंख्यक

6-वचन के आधार पर भिन्न

*वंचित बालक-

बौद्धिक रूप से भिन्न बालक-ऐसे भी कुछ बालक होते हैं जो सामान्य बालकों से बौद्धिक क्षमताओं में अलग होते हैं यह अलगाव धनात्मक और ऋणात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है।

तमाम मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि लब्धि का विस्तार 0.25 से लेकर 140 या इस से भी ऊपर तक माना है। सामान्य बालक 90-110 तक की बुद्धि लब्धि रखता है। तथा में वे सभी बालक जिन की बुद्धि लब्धि 70 से कम या 70 कथा 130 या उससे ज्यादा होते हैं बौद्धिक रूप से अपवादी या विशिष्ट कहे जाते हैं। बौद्धिक तौर पर अपवादी के प्रकार इस तरह है-

1-प्रतिभा संपन्न

2-पिछड़े बालक

3-सृजनात्मक बालक

4-मनपसंद

5-निम्न उपलब्धि वाले बालक

<u>समस्याएं-</u>

1-निम्न स्तरीय समायोजन

2-शारीरिक क्रियाओं में कम रुचि

3-कक्षा गतिविधियों से लाभान्वित नहीं

4-सामाजिक मानदंडों की उपेक्षा

5-अंतर्मुखी व्यक्तित्व

<u>आवश्यकताएं-</u>

1-निर्देशन और परामर्श

2-विशिष्ट विद्यालय

3-पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन

4-विशिष्ट कक्षाएं

5-सामूहिक विवाह का आयोजन

<u>शारीरिक रूप से विशिष्ट बालक</u> -सभी विकलांग बच्चे एक ही तरह के नहीं होते हैं बल्कि उनकी रूचि कार्यक्षमता में भी अंतर पाया जाता है।

1-शारीरिक विकलांग

2-मानसिक विकलांग

3-सामाजिक कुसमायोजन

शारीरिक कमी के कुछ कारण है जो इस प्रकार हैं।

1-अनुवांशिक कारक

2-जन्म पूर्व क्षति

3-जन्मोउपरांत चोट

4-जन्मक्षति

<u>समस्याएं-</u>

1-मनोवैज्ञानिक समस्याएं

2-आवागमन की समस्या

3-सीखने की धीमी गति

4-संप्रेषण की समस्या

5-समायोजन की समस्या

6-कक्षा गतिविधियों में सीमित सहभागिता

<u>आवश्यकताएं-</u>

1-समाज द्वारा स्वीकृति

2-विशिष्ट विद्यालय

3-हस्तकलाओ की शिक्षा

4-विशेष उपकरण

5-प्रशिक्षित अध्यापक

6-दृश्य श्रव्य साधन

<u>सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक</u>-इसमें ऐसे बालक कहते हैं जो सामाजिक तौर पर कुसमायोजित होते हैं सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक सामाजिक परंपराओं ,मान्यताओं, मूल्यों और विचारों के लिए विद्रोह की भावना रखते हैं । सामाजिक विशिष्ट बालकों में निम्न प्रकार के बालक आते हैं।

*बाल अपराधी

*समस्यात्मक

*वंचित

***<u>बाल अपराधी</u>**-ऐसा बालक जिस सामाजिक नैतिक और राज्य के नियमों को तोड़ता है तथा जिसके द्वारा किए गए काम इतने गंभीर होते हैं कि राज्य नियमों के हिसाब से उनको दंड देना जरूरी हो जाता है। उन्हें बाल अपराधी कहा जाता है। अर्थात बालक कैसा व्यवहार जो कानून को नजर में अपराध होता है। उसे बाल अपराधी कहा जाता है। बाल अपराध 16 वर्ष या उससे नीचे की उम्र द्वारा किया गया काम होता है।

<u>समस्यात्मक बालक</u>- समस्यात्मक बालक में बालक होते हैं जिनका व्यवहार या व्यक्तित्व किसी बात में गंभीर रूप से असामान्य होता है।

<u>वंचित बालक-</u> यदि इस के आधार पर देखा जाए तो तीन तरह के समस्यात्मक बालक होते हैं। सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक इन्हीं तीनों कारणों की वजह से इन बालकों को वचन बालकों की श्रेणी में लाया जाता है।

<u>समस्याएं-</u>

1-भावना ग्रंथियां

2-समायोजन की समस्या

3-झगड़ालू प्रगति

4-संवेगात्मक अस्थिरता

5-नकारात्मक दृष्टिकोण

6-पूर्वाग्रह

संवेगात्मक रूप से विशिष्ट बालक-ऐसे बालक जो अपनी भावना पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं । वे संवेगात्मक रूप से विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं।

समस्याएं-

1-अवसादी या निराशावादी

2-अधिक सक्रियता

3-आत्म विश्वास में कमी

4- आस्थिरता

मौखिक संचार में भिन्न बालक-मौखिक संचार में बिन बालकों के मुख्य रूप से दो प्रकार होते हैं पहला वाक क्षति युक्त बालक दूसरा भाषा विकलांग बालक

मनोसामाजिक रूप से भिन्न-

इस श्रेणी में ऐसे बालक आते हैं जो संवेगात्मक रूप से परेशान होते हैं और सामाजिक रुप से कुसमायोजित होते हैं।

सांस्कृतिक रूप से भिन्न बालक-सांस्कृतिक तौर पर भिन्न बालकों में ऐसे बालक आते हैं जो अधिगम सुविधा युक्त या सांस्कृतिक रूप से अल्पसंख्यक या वंचित होते हैं ऐसे बालकों को वे तमाम सुविधाएं नहीं मिल पाती जो सामान्य बालकों को दी जाती है।

पिछड़े बालक-बालकों की शैक्षिक अवनति ही पिछड़ापन कहलाती है जब बालकों की शिक्षा उपलब्ध ही उनकी प्राकृतिक योग्यता से कम स्तर की होती है तब ऐसे बालक को पिछड़ा बालक कहा जाता है।

प्रतिभाशाली बालक-प्रतिभाशाली बालकों को आदि सामान्य भी कहा जाता है इन बालकों का बौद्धिक स्तर उच्च कोटि का होता है।

सृजनात्मक बालक-रचनात्मकता वह विशेष योग्यता है जिसके द्वारा नवीन संबंधों का ज्ञान होता है जो सृजनशील मनुष्य होते हैं। वह सभी कार्य सर्जनात्मक होते हैं जिसका हल अचानक मिल जाए क्योंकि विचारक के लिए इस तरह का हल हमेशा नवीनता लिए होता है।